बाँसुरीवाला

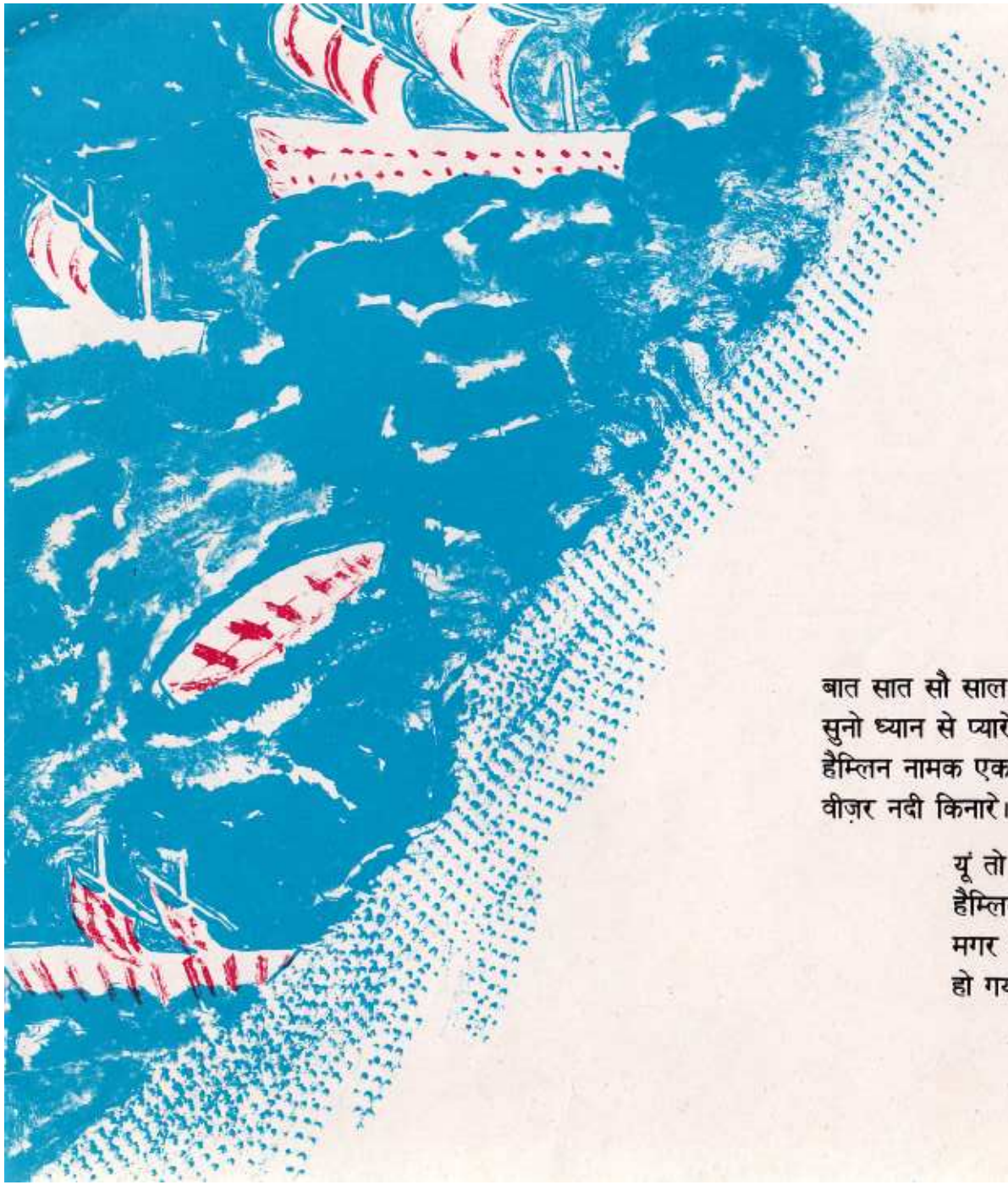

बात सात सौ साल पुरानी
सुनो ध्यान से प्यारे
हैम्लिन नामक एक शहर था
वीज़र नदी किनारे।

यूं तो शहर बहुत सुन्दर था
हैम्लिन जिसका नाम
मगर वहां के लोगों का
हो गया था चैन हराम।

इतने चूहे, इतने चूहे
गिनती हो गई मुश्किल
जिधर भी देखो, जहां भी देखो
करते दिखते किल-बिल।

बाहर चूहे, घर में चूहे
दरवाजे और दर में चूहे
खिड़की और आलों में चूहे
थालों और प्यालों में चूहे।

ट्रंक में और संदूक में चूहे
फ़ौजी की बंदूक में चूहे
अफ़सर की गाड़ी में चूहे
नौकर की दाढ़ी में चूहे।

पूरब पच्छिम, उत्तर दक्खिन
जिधर भी देखो चूहे
ऊपर नीचे आगे पीछे
जिधर भी देखो चूहे।

दुबले चूहे, मोटे चूहे
लंबे चूहे, छोटे चूहे
काले चूहे, गोरे चूहे
भूखे और चटोरे चूहे।
चूहे भी वो ऐसे चूहे
बिल्ली को खा जाएं
कुत्ते उन से डर के भागें
चीलें जान बचाएं।
चूहों से घबराकर
राजा ने ये किया ऐलान
जो उनसे पीछा छुटवाये
पाये ढेर इनाम।

सुनकर ये ऐलान वहां पर
पहुंचा एक मदारी
मस्त क़लंदर नाम था उसका
मुंह पर लंबी दाढ़ी।

झोले से बंसी निकालकर
मीठी तान बजाई
जिसको सुनकर चूहा सेना
दौड़ी दौड़ी आई।

कोनों खुदरों से निकले
और निकले महल अटारी से
नाले नाली से निकले
और निकले बक्स पिटारी से।

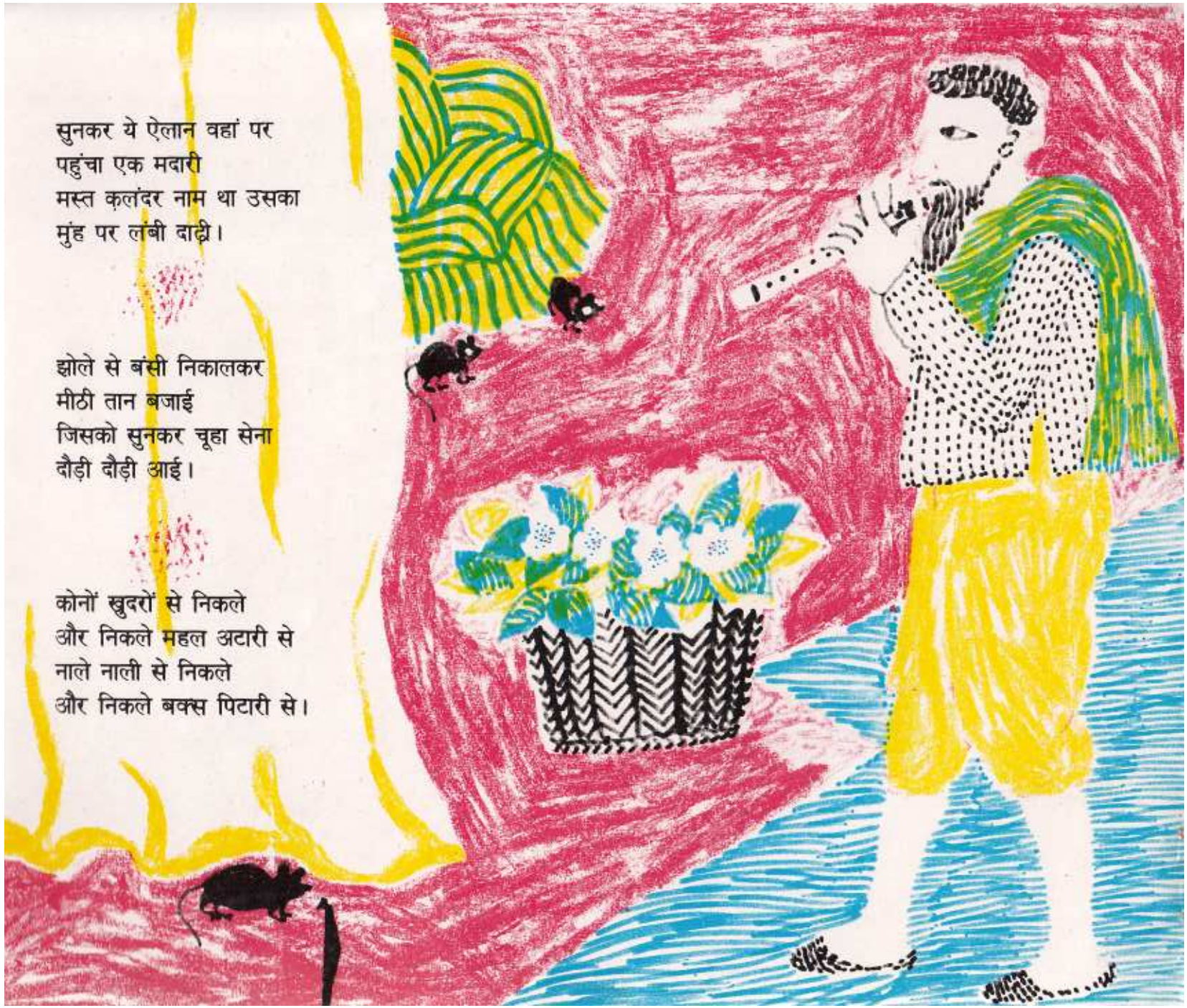

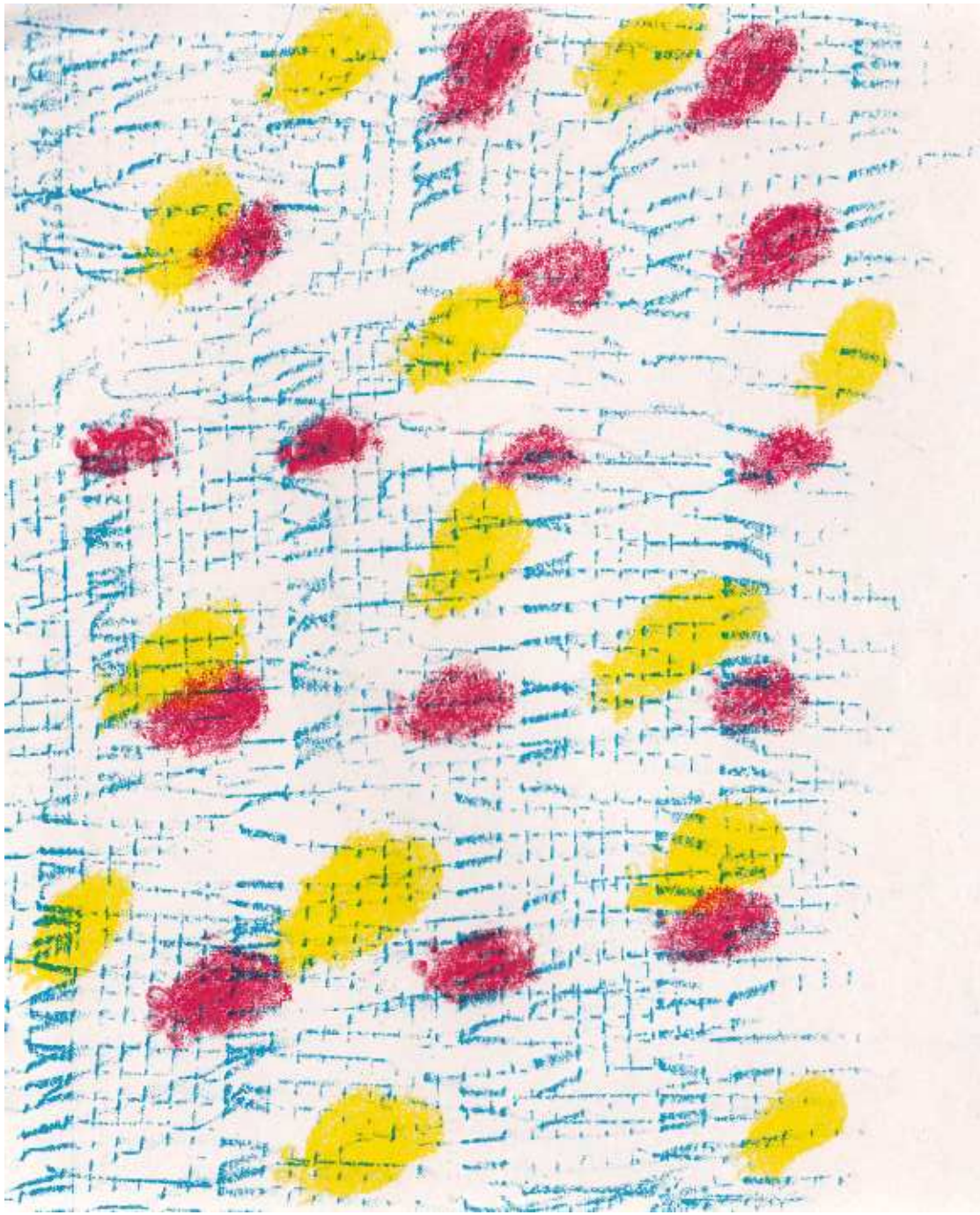

घर की चौखट को फलांगकर
आये ढेरों चूहे
छत के ऊपर से छलांग कर
आये ढेरों चूहे।

लाखों चूहों का जलूस
चल पड़ा मदारी के पीछे
जैसे कोई डोरी उनको
लिये जा रही हो खींचे।

आगे-आगे चला मदारी
पीछे चूहे सारे
चलते चलते वो जा पहुंचे
वीज़र नदी किनारे।

वहां पहुंच कर भी ना ठहरा
वो छ:फुटा मदारी
उतर गया दरिया के अंदर
पीछे पलटन सारी।

ले गया मदारी सब चूहों को
वीज़र नदी के अंदर
एक भी ज़िंदा नहीं बचा
सब डूबे नदी के अंदर।

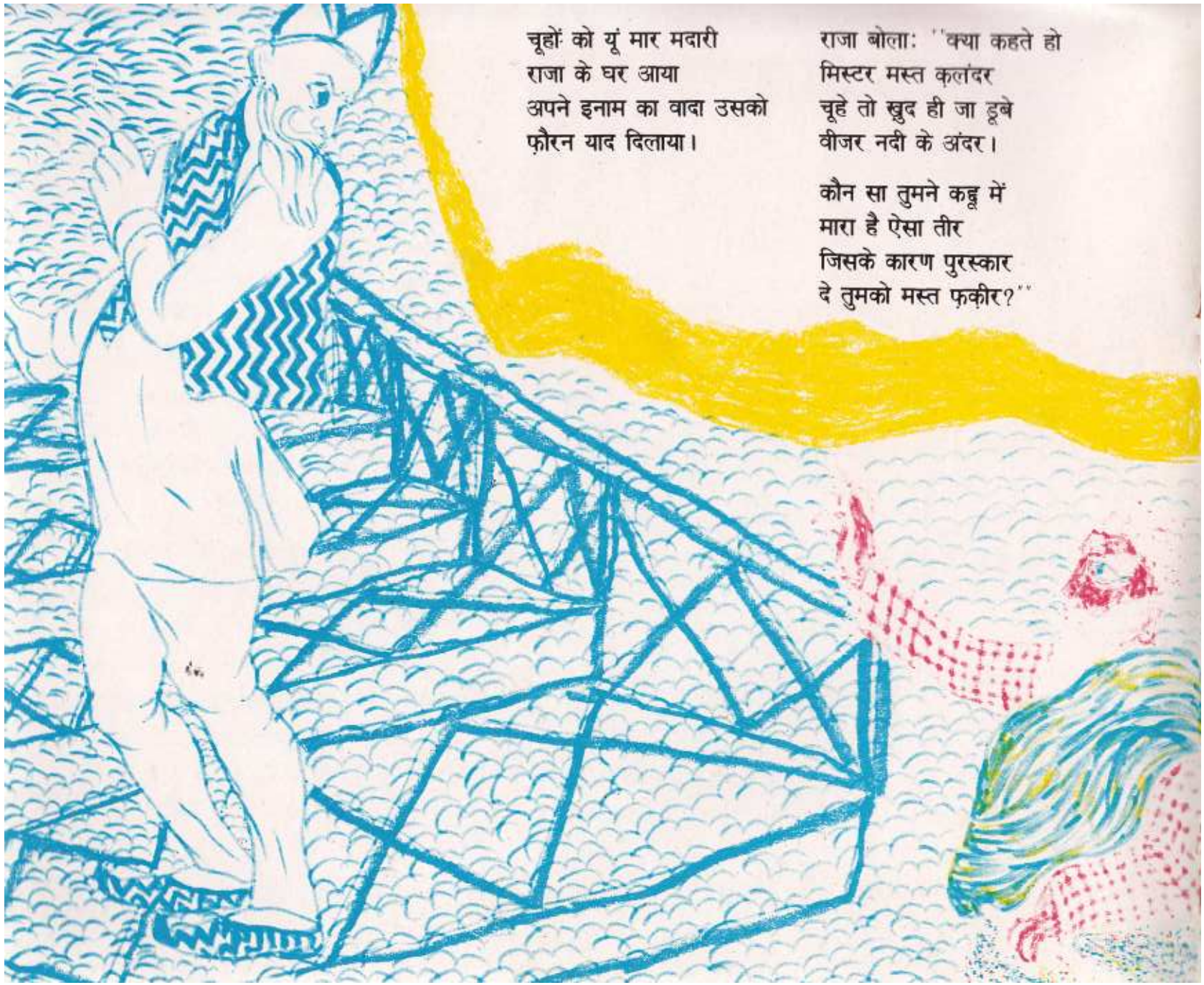

चूहों को यूं मार मदारी
राजा के घर आया
अपने इनाम का वादा उसको
फ़ौरन याद दिलाया।

राजा बोला: "क्या कहते हो
मिस्टर मस्त कलंदर
चूहे तो खुद ही जा डूबे
वीजर नदी के अंदर।

कौन सा तुमने कद्दू में
मारा है ऐसा तीर
जिसके कारण पुरस्कार
दे तुमको मस्त फ़क़ीर?"

देखके ऐसी मक्कारी
वो रह गया हक्का-बक्का
उसके भोले मन को इससे
लगा जोर का धक्का।

गुस्से से हो आगबबूला
महल से बाहर आया
थैले से बंसी निकाल कर
सुंदर राग बजाया।

सुनकर उसकी बंसी की धुन
बच्चे दौड़े आये
कुटियाओं, बंगलों, महलों से
दौड़े-दौड़े आये।

लंबे बच्चे, छोटे बच्चे
दुबले बच्चे, मोटे बच्चे
दूर के बच्चे, पास के बच्चे
साधारण और ख़ास से बच्चे।

हंसते बच्चे, रोते बच्चे
जाग रहे और सोते बच्चे
गांव के बच्चे, नगर के बच्चे
गली, मुहल्ले, डगर के बच्चे।

लाखों बच्चों का जमघट
चल पड़ा मदारी के पीछे
जैसे कोई जादू, उनको
लिए जा रहा हो खींचे।

ले गया दूर शहर से उनको
वो छः फुटा मदारी
नहीं रोक पाई बच्चों को
नगर की जनता सारी।

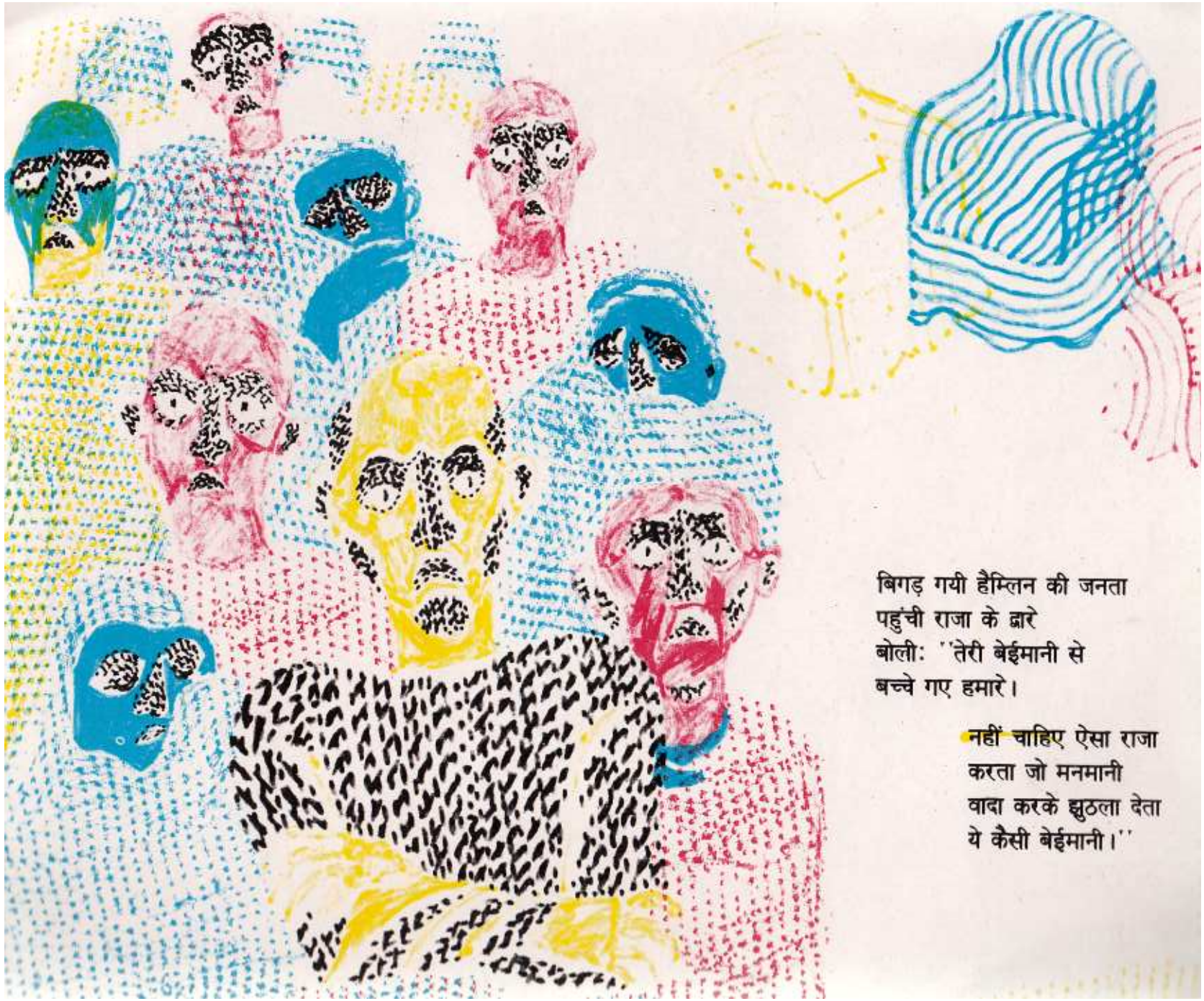

बिगड़ गयी हैम्लिन की जनता
पहुंची राजा के द्वारे
बोली: "तेरी बेईमानी से
बच्चे गए हमारे।

नहीं चाहिए ऐसा राजा
करता जो मनमानी
वादा करके झुठला देता
ये कैसी बेईमानी।"

राजा से गद्दी छीनी
दे डाला देशनिकाला
और हैम्लिन का राज पाट
खुद, जनता ने ही संभाला।

नये राज ने मस्त मदारी
को फौरन बुलवाया
माफी मांगी और मुंहमांगा
पुरस्कार दिलवाया।

सारे बच्चे वापस पहुंचे
अपने अपने घर पे
पूरे शहर में खुशी मनी
और दीये जले दर-दर पे।

कविता सफ़दर हाश्मी

तस्वीरें अर्पिता सिंह

मलयश्री हाश्मी द्वारा सहमत की ओर से प्रकाशित ८ विट्ठल भाई पटेल हाऊस, रफी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
मुद्रक अजंता ऑफसेट एंड पैकेजिंग्स लिमिटेड ९५-बी, वजीरपुर इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली-११००५२

Rs 10/-